विश्व न्याय मन्दिर

रिज़्वान 2008

विश्व के बहाईयों को

परमप्रिय मित्रगण,

हज़ार-ओ-हज़ार लोग, पूरे मानव परिवार की विविधता को अपनाते हुए, रचनात्मक शब्दों का क्रमबद्ध अध्ययन एक ऐसे वातावरण में कर रहे हैं जो गम्भीर और आध्यात्मिक उल्लास से भरा है। जैसे-जैसे वे कार्य, समीक्षा और परामर्श की प्रक्रिया को लागू करने का प्रयास करते हैं, और इन सब से जो अन्तर्दृष्टि उन्हें प्राप्त होती है उससे वे पाते हैं कि प्रभुधर्म की सेवा करने की उनकी क्षमता नई ऊँचाइयों को पा चुकी है। अपने सृष्टिकर्ता के साथ वार्तालाप की प्रत्येक हृदय की अन्तरंग अभिलाषा के उत्तरस्वरूप, वे अलग-अलग परिवेश में सामूहिक प्रार्थना सभाओं का आयोजन करते हैं, एक-दूसरे से प्रार्थनामय वातावरण में जुड़ते हैं, आध्यात्मिक ग्राह्‍्यशीलता को बढ़ाते है और जीवन के एक ऐसे पैटर्न को आकार देते है जो अपने भक्तिमय चरित्र के कारण भिन्न होता है। जब वे एक-दूसरे के घरों में जाते हैं और परिवारों, मित्रों तथा जान-पहचान के लोगों से मिलते हैं तब आध्यात्मिक महत्व के विषयों पर सार्थक और उद्देश्यपूर्ण बातें करते हैं, प्रभुधर्म का ज्ञान बढ़ाते हैं, बहाउल्लाह का संदेश देते हैं और एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक अभियान में शामिल होने के लिये उन्हें आमंत्रित करते हैं। दुनिया भर के बच्चों की आकांक्षा-अभिलाषा और आध्यात्मिक शिक्षा की उनकी जरुरत को जानते हुए उन्हें कक्षाओं में शामिल करने के अपने प्रयास बढ़ाते हैं, जो युवाओं के लिये आकर्षण के केन्द्र बनती हैं और समाज में प्रभुधर्म की जड़ें मजबूत करती हैं। वे किशोरों को अपनी जीवन की नाव सही दिशा में ले चलने में सहयोग देते हैं और उन्हें इतना सशक्त बना देते हैं कि वे अपनी ताकत की धार सभ्यता के विकास की ओर मोड़ पाएँ। इस प्रकार, मानव संसाधनों के बहुतायत का लाभ पा कर उनमें से अधिकांश लोग अपनी आस्था ऐसे प्रयासों के माध्यम से व्यक्त करते हैं जो मानवजाति की आध्यात्मिक और भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। इस रिज़्वान की पावन बेला में जब हम विश्वव्यापी बहाई समुदाय की प्रगति पर विचार करते हैं तब कुछ ऐसा ही परिदृश्य पातें हैं।

अनेक अवसरों पर हमने संकेत दिया है कि सन् 2021 में प्रभुधर्म के रचनात्मक काल की शताब्दी के समारोह तक चलने वाली विश्व स्तर की योजनाओं का उद्देश्य व्यक्तिगत अनुयायी, संस्था और समुदाय के क्रियाकलाप और विकास के ज़रिये प्राप्त किया जायेगा। अभी, जो

निरन्‍तर और केन्द्रित प्रयासों की चौथाई शताब्दी का मध्य बिन्दु है, में बढ़ी हुई क्षमता के प्रमाण सब जगह साफ़ नज़र आते हैं। योजना के तीन प्रतिभागियों के बीच पारस्परिक क्रिया से उत्पन्न उत्साह की जो लहर चली है उसका बढ़ता हुआ प्रभाव ख़ास महत्व का है। राष्ट्रीय से स्थानीय स्तर तक संस्थाएँ अब साफ़तौर पर समझती हैं कि उन अवस्थाओं का निर्माण किस प्रकार किया जाये जो एक सामान्य लक्ष्य को पाने के लिये अनुयायियों की आध्यात्मिक शक्‍ति की अभिव्यक्ति में सहायक हों। अधिकांश समुदाय उस वातावरण के निर्माण में लगे हैं जिसमें संस्थान के सहयोग से व्यक्तिगत प्रयास और सामूहिक क्रियाकलाप प्रगति प्राप्त करने में एक-दूसरे के पूरक हों। जो सक्रियता और जीवंतता यह समुदाय प्रदर्शित करता है और एक समान उद्देश्य, जो इसके प्रयासों को प्रेरणा देता है, वे जीवन के हर क्षेत्र से वैसे लोगों को आकर्षित कर रहे हैं जो मानवजाति के कल्याण के लिये अपना समय और शक्ति देने की इच्छा रखते हैं। यह स्पष्ट है कि बहाउल्लाह के प्रकटीकरण से आध्यात्मिक सम्पोषण पाने की इच्छा रखने वाले ग्रहणशील लोगों के लिये इस समुदाय के द्वार और भी खोल दिये गये हैं। योजना के तीन प्रतिभागियों के बीच प्रगाढ़ होती पारस्परिक क्रियाओं का इससे बड़ा प्रमाण और कोई नहीं कि पिछले वर्ष शिक्षण के क्षेत्र में आश्चर्यजनक तेजी आई। समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकार किये जाने की प्रक्रिया में प्रगति वास्तव में महत्वपूर्ण थी।

इन प्रगाढ़ हुई पारस्परिक क्रियाओं की परिधि में व्यक्तिगत पहल अब पहले से भी अधिक प्रभावी है। अपने पिछले संदेशों में हमने उस प्रोत्साहन की चर्चा की है जो व्यक्तिगत पहल के लिये अनुयायियों को संस्थान प्रक्रिया देती है। सभी महाद्वीपों में मित्रगण पवित्र वचनों के अध्ययन में इस उद्देश्य के साथ सीखने की प्रक्रिया में जुटे हैं कि प्रभुधर्म के विकास के लिये इन शिक्षाओं को कैसे कार्यरूप दिया जाये। अपने समुदायों की आध्यात्मिक ऊर्जा के लिये बड़ी संख्या में अब लोग अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहे हैं; विकास के एक सुनिश्चित ढाँचे के अंदर वे बड़े उत्साह के साथ सेवा के कार्य कर रहे हैं। सीखने की विनीत मुद्रा को अपनाये रखकर उन्होंने जितना प्रभुधर्म की सेवा के क्षेत्र में काम किया उतना ही उनका उत्साह और विवेक, उमंग और गहन पैठ, जोश और सावधानी, संकल्प और ईश्वर में भरोसा बढ़ा है और उन्होंने एक-दूसरे को सहयोग दिया है। बहाउल्लाह का संदेश देने और इसकी सत्यता की विस्तृत व्याख्या करने में उन्होंने शोग़ी एफ़ेन्दी के इन शब्दों को अपने दिलों में बसा लिया है कि जिस सत्य के वे पक्षधर हैं उसे व्यक्त करने में उन्हें न तो ”हिचकिचाना“ चाहिये, न ही ”झिझकना“ चाहिये, न तो ”ज्यादा बढ़-चढ़ कर“ कहना चाहिये, न ही ”काट-छांट“ कर रखना चाहिये। वे न तो ”धर्मान्ध“ बनें, न ही ”अति-उदार“! शिक्षण की निरंतरता को बनाये रखकर उन्होंने यह निश्चय करने की अपनी योग्यता बढ़ा ली है कि क्या सुनने वाले की ग्रहणशीलता को देखते हुए उन्हें ”सतर्क“ रहना

चाहिये, अथवा ”निर्भीक“ होना चाहिये, ”शीघ्रता से“ संदेश दे देना चाहिये अथवा ”थोड़ा समय लेकर“ अपनी बात करनी चाहिये, ”सीधे“ संदेश देना चाहिये या फिर ”अप्रत्यक्ष“ रूप से।

हमें लगातार जो उत्साहवर्धक लगता है वह यह कि व्यक्तिगत पहल कितनी अनुशासित है। समुदाय सब जगह धीरे-धीरे प्रणालीबद्ध तरीके से सीखी गई बातों को आत्मसात कर रहे हैं और योजनाओं की वर्तमान श्रृंखला द्वारा परिभाषित ढाँचे ने मित्रों द्वारा किये गये प्रयासों को निरंतरता और लचीलापन दिया है। यह ढाँचा उन्हें सीमित करने के बजाय अवसर के उपयोग, परिचय बढ़ाने और सम्बन्ध बनाने के तरीकों तथा प्रणालीबद्ध विकास के सपनों को साकार करने के अवसर प्रदान करता है। संक्षेप में, यह उनकी सामूहिक शक्तियों को आकार देता है।

जब हम सर्वेक्षण करते हैं कि दुनिया भर में क्या कुछ उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं तब हमारा हृदय ईरान के बहाईयों की प्रशंसा के लिये ख़ासतौर पर भर उठता है। अत्यंत कठिन परिस्थितियों में भी साहस के साथ अपने देश की सेवा के लिये वे उठ खड़े हुए हैं, हालाँकि जो रास्ते उनके लिये खुले हैं वे सीमित हैं। प्रभुधर्म के प्रशासन पर लगाये गये प्रतिबंधों के बावजूद वे व्यक्तिगत तौर पर अपने साथी नागरिकों को बहाउल्लाह की शिक्षाओं से परिचित करा रहे हैं और उनके आरोग्यदायी संदेश पर सीधी बातचीत कर रहे हैं। जब उन्होंने ऐसा करना शुरू किया तब प्रबुद्ध वर्ग से उन्हें न केवल समर्थन मिला, अपितु उनकी कल्पना से परे उनमें प्रभुधर्म के प्रति ग्रहणशीलता भी मिली।

आज समाज में व्याप्त एकीकरण और विघटन के बलों के प्रति सजग, बहाउल्लाह का प्रत्येक अनुयायी दुनिया के हर हिस्से में प्रभुधर्म के प्रति ग्रहणशीलता में वृद्धि और वर्तमान विश्व व्यवस्था के असफल होने के बीच के सम्बन्ध को देखता है। यह निश्चित है कि जैसे-जैसे मानवजाति की पीड़ायें गहराएँगी वैसे-वैसे यह ग्रहणशीलता बढ़ेगी। कोई भूल न होने दें: बढ़ती हुई ग्रहणशीलता के उत्तरस्वरूप जिस क्षमता के निर्माण को गति दी गई है वह अभी अपनी आरम्भिक अवस्था में है। उथल-पुथल से भरी इस दुनिया की जरुरतों का पहाड़ आने वाले सालों में इस क्षमता की आखिरी हद तक परीक्षा लेगा। मानवजाति उत्पीड़न की ताकतों का प्रहार सहते सहते पूरी तरह टूट चुकी है, यह प्रहार चाहे धार्मिक पूर्वाग्रहों की गहराई के कारण सहना पड़ा हो अथवा अनियंत्रित भौतिकवादी प्रवृत्तियों के चरमबिन्दु तक पहुँच जाने के कारण। इस रोग के कारणों को बहाई समझ सकते हैं। बहाउल्लाह पूछते हैं, ”इससे अधिक दुःखदायी और कौन-सा उत्पीड़न हो सकता है कि सत्य को जानने की इच्छा रखने वाला व्यक्ति और ईश्वर का ज्ञान पाने की अभिलाषा रखने वाला यह नहीं जान पाये कि इसके लिये उसे कहाँ जाना है और किससे पूछना है ?“ गंवाने के लिये समय नहीं है। योजना के तीन प्रतिभागियों की गतिविधियों का लगातार बढ़ते रहना और इन्हें विकास की अवस्था तक ले जाना बहुत जरूरी है।

अब्दुल-बहा ने ”सफलता और समृद्धि“ के लिये ”दो आह्वानों“ की भूरि-भूरि प्रशंसा की है, वे दो आह्वान जिन्हें ”मानवजाति की प्रसन्नता के शिखर“ से सुना जा सकता है। एक है ”सभ्यता“ का आह्वान, ”भौतिक संसार की प्रगति“ का आह्वान। इसमें ”विधि-विधान“, ”नियम-कानून“, ”कला और विज्ञान“ शामिल हैं, जिनके सहारे मानव विकास करता है। दूसरा है ”हृदय को स्पन्दित कर देने वाला ईश्वर का आह्वान“ जिस पर मानवजाति की कभी न समाप्त होने वाली प्रसन्नता निर्भर करती है। अब्दुल-बहा कहते हैं, ”यह दूसरा आह्वान ईश्वर के निर्देशों-उपदेशों और चेतावनियों तथा नैतिकता के संसार से जुड़ी परोपकार की भावना पर आधारित है जो मानवजाति के दीप को प्रकाशित कर देती है। इसकी भेदक शक्ति भगवद्वाणी है।“ जब आप अपने क्लस्टर में सश्रम कार्यरत रहेंगे तब आप अपने इर्द-गिर्द के समाज के जीवन में और गहरे पैठेंगे और इस चुनौती का सामना करेंगे कि सीखने की प्रणालीबद्ध प्रक्रिया को और विस्तार दें, जिस प्रक्रिया के तहत सम्प्रति आप बढ़ते हुए मानवीय प्रयासों को शामिल कर रहे हैं। जो पहल आप करते हैं, जो तरीका आप अपनाते हैं और जिन स ाधनों का आप उपयोग करते हैं उनमें आपको उसी प्रकार की एकरूपता बनाये रखनी होगी जो आज हो रहे विकास के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

एक-के-बाद-एक क्लस्टरों के विकास को बनाये रखना उन गुणों पर निर्भर करता है जिनके कारण सेवा के क्षेत्र में आप अपनी पहचान बनाते हैं। आपके विचार और कार्य जातिगत, धार्मिक, आर्थिक, राष्ट्रीय, जनजातीय, वर्ग अथवा सांस्कृतिक -- हर प्रकार के पूर्वाग्रह से इतने मुक्त होने चाहिये कि अपरिचित भी आपमें एक प्रिय मित्र देख सके। आपकी उत्कृष्टता का स्तर इतना ऊँचा होना चाहिये और आपका जीवन इतना शुद्ध होना चाहिये कि जो नैतिक प्रभाव आप समुदाय पर डालें वह उनके मन-मानस में घर कर सके। अगर आप केवल अपने व्यवहार में ईमानदारी रखें, जिसके लिये प्रभुधर्म के पावन लेख निर्देश देते हैं, तो आप समाज की जड़ को खोखला कर रहे भ्रष्टाचार के असंख्य रूपों का सामना करने में समर्थ हो सकते हैं। धन अथवा निर्धनता को परे रखकर अगर आप प्रत्येक व्यक्ति में सम्मान और सच्चरित्रता देखें तो आप न्याय के विजेता बन जाएँगे। और जब बहाई परामर्श के सिद्धान्त पर आपकी संस्थाओं की प्रशासनिक प्रक्रिया चलती रहेगी तब मानवजाति का बहुतायत बहाई समुदाय की शरण में आता रहेगा।

जब आप इस पथ पर आगे बढ़ें तो आश्वस्त रहें कि स्वर्गलोक के देवदूत आपकी सहायता के लिये अपने सैन्यबल तैयार किये बैठे हैं। हमारी निरंतर प्रार्थनाएँ आपके इर्द-गिर्द होंगी।

-विश्व न्याय मन्दिर